Krishi Kumbh
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 01, (जुन, 2024)
पृष्ठ संख्या 37–38

बुन्देलखण्ड में पशुओं का आहार प्रबन्धन

अमित कुमार[1], ड़ॉ अरुण कुमार[2], शुभम सिंह[3], बलवीर गौतम[4], सुमित कुमार सिंह[5]

[1,4,5]परास्नातक छात्र, [2]सहायक प्राध्यापक शस्य विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय बाँदा, उत्तर प्रदेश 210001

[3]शोध छात्र कृषि प्रसार शिक्षा विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश 250110, भारत।

Email Id: – sgyanendra651@gmail.com

बुन्देलखण्ड भारत के कृषि प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन का विशेष महत्व है। सकल घरेलू कृषि उत्पाद में पशुपालन का 28–30 प्रतिशत का योगदान सराहनीय है जिसमें दुग्ध एक ऐसा उत्पाद है जिसका योगदान सर्वाधिक है। भारत में विश्व की कुल संख्या का 15 प्रतिशत गायें एवं 55 प्रतिशत भेड़ है और देश के कुल दुग्ध उत्पादन का 53 प्रतिशत भैंसों व 43 प्रतिशत गायों और 3 प्रतिशत बकरियों से प्राप्त होता है। बुन्देलखण्ड में पशुओं के आहार और चारे का प्रबंधन एक महत्वपूर्ण चुनौती है, खासकर इस क्षेत्र की कठिन जलवायु और पानी की कमी को ध्यान में रखते हुए, हरा चारा पोषक तत्वों से भरपूर होता है और विटामिन 'ए' का प्राथमिक स्रोत भी होता है । हरा चारा संतुलित मात्रा में खिलाने से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। श्वसन तंत्र और बेहतर दृष्टि के लिए आवश्यक होता है। यह सांद्रण कम खिलाकर दूध उत्पादन की लागत को कम करता है।

पशुओं के आहार का प्रभावः

बुन्देलखण्ड में पशुओं के आहार और चारे का प्रबंधन करने के तरीकों का प्रभाव सिद्धांत रूप में समझने के लिए हमें विभिन्न कारकों को ध्यान में रखना होगा। ये प्रभाव पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन, पर्यावरणीय स्थिरता और आर्थिक स्थिति पर पड़ते हैं जो निम्नलिखित हैं।

1. पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रभावः

बेहतर पोषणः संतुलित और पौष्टिक आहार देने से पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर होता है। इससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और वे कम बीमार होते हैं।

उत्पादकता में वृद्धिः पौष्टिक चारे और संतुलित आहार से दुग्ध उत्पादन और मांस की गुणवत्ता में सुधार होता है।

2. आर्थिक लाभः

उत्पादन लागत में कमीः साइलेज, हे, और अन्य आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने से चारे की स्थिर आपूर्ति होती है, जिससे चारे की कमी के समय में खरीदारी की जरूरत कम होती है।

आय में वृद्धिः बेहतर पोषण और स्वास्थ्य के कारण पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि होती है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है। उच्च गुणवत्ता का दूध और मांस बेचकर किसानों को अधिक लाभ होता है।

सरकारी योजनाओं का लाभः सरकारी सहायता और सब्सिडी का सही उपयोग करने से किसानों को आर्थिक सहायता मिलती है, जिससे उनके आर्थिक हालात में सुधार होता है।

3. पर्यावरणीय स्थिरताः

जल संरक्षणः ड्रिप इरिगेशन और वॉटर हार्वेस्टिंग तकनीकों का उपयोग करके पानी की बचत होती है। इससे जल संसाधनों का स्थायी उपयोग संभव होता है।

भूमि की उर्वरताः सामूहिक चराई और चराई चक्र अपनाने से भूमि की उर्वरता बनी रहती है और मिट्टी का क्षरण कम होता है।

स्थानीय पौधों का उपयोगः स्थानीय पौधों और फसलों का उपयोग चारे के रूप में करने से जैव विविधता बनी रहती है और पर्यावरणीय संतुलन कायम रहता है।

4. पोषण संबंधी प्रभावः

संतुलित आहारः संतुलित आहार और पूरक पोषक तत्वों के उपयोग से पशुओं को सभी आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं, जिससे उनकी समग्र स्वास्थ्य स्थिति में सुधार होता है।

उच्च गुणवत्ता वाला चाराः आधुनिक तकनीकों और चारा फसलों के सही चयन से उच्च गुणवत्ता वाला चारा प्राप्त होता है, जिससे पशुओं की पोषण की आवश्यकताएं पूरी होती हैं।

समाधानः बुन्देलखण्ड में पशुओं के आहार और चारे का प्रबंधन करने के लिए विभिन्न सिद्धांत–आधारित समाधान प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इन समाधानों का उद्देश्य पशुओं के पोषण में सुधार, किसानों की आर्थिक स्थिति में वृद्धि, और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है। निम्नलिखित समाधान सिद्धांत आधारित दृष्टिकोण के तहत प्रस्तुत किए गए हैं:

1. चारे की उपलब्धताः किसानों को चारे की उपलब्धता को सुनिश्चित करना चाहिए ताकि वे पशुओं को बिना खुले छोड़े भोजन दे सकें।
2. बाजरा, ज्वार, मक्का, और नेपियर घास जैसी फसलें पशुओं के लिए चारे के रूप में उगाई जा सकती हैं। ये फसलें कम पानी में भी अच्छी पैदावार देती हैं।
3. हरी फसलों को साइलेज पिट में संरक्षित करके पूरे वर्ष चारा उपलब्ध कराया जा सकता है। यह प्रक्रिया फसलों की कटाई के तुरंत बाद की जाती है।
4. पशुओं को संतुलित आहार देने के लिए हरे चारे के साथ सूखा चारा, खली, और खनिज मिश्रण मिलाकर देना चाहिए।
5. किसानों को चारा प्रबंधन और पशुपालन की उन्नत तकनीकों के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।
6. पशुपालकों को सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली योजनाओं और सब्सिडी के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए।

भविष्यः

इन तरीकों को अपनाकर बुन्देलखण्ड में पशुओं के आहार और चारे का प्रबंधन बेहतर तरीके से किया जा सकता है, जिससे पशुपालकों की आजीविका में सुधार हो सकेगा और पशुओं की स्वास्थ्य समस्याओं को कम किया जा सकेगा। बुन्देलखण्ड में पशुओं के आहार और चारे का प्रबंधन करने के ये तरीके विभिन्न आयामों में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। ये न केवल पशुओं की स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाते हैं, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत करते हैं। साथ ही, पर्यावरणीय स्थिरता और समुदाय में सहयोग को बढ़ावा देते हैं। इन सभी का सम्मिलित प्रभाव यह होता है कि क्षेत्र में सतत विकास और समृद्धि सुनिश्चित होती है।